एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 01 (जनवरी-फरवरी, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

काचरी की उत्पादन तकनीकी

(*डॉ. हरि दयाल चौधरी[1], महेन्द्र कुमार सारण[2] एवं सुनीता चौधरी[3])
[1]कृषि विज्ञान केंद्र, गुडामालानी, कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर
[2]पादप रोग विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
[3]पादप रोग विज्ञान विभाग, श्री कर्ण नरेंद्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर
*haridayal.choudhary@gmail.com

राजस्थान के मरुस्थलीय अचंल में काचरी का उत्पादन प्राचीन समय से होता आ रहा है। रेगिस्तान में लोगों के खान-पैन, त्योंहर, लोकगीत व धार्मिक पूजन सामग्री आदि में काचरी का विशेष महत्व है। काचरी का उपयोग सब्जी, चटनी, सलाद के रूप में किया जाता है। इसके सूखे फलों को संरक्षित कर वर्ष भर सब्जी व चटनी के लिए उपयोग किया जाता है। काचरी के चूर्ण का व्यावसायिक स्तर पर मसाला पाउडर व औषधियां के रूप में उपयोग किया जाता है। इस प्रदेश में काचरी आम आदमी के लिए एक गुणकारी सब्जी का मुख्य स्त्रोत माना जाता है | काचरी में सुखा सहिष्णु का गुण होने के कारण इसे शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रो में बहुतायत रूप में उगाया जाता है। राजस्थान के मारवाड़ क्षेत्र में स्थानीय फसले जैसे- बाजरा, ग्वार, मोठ, चंवला व तिल के साथ काचरी की बुवाई की जाती है। काचरी कूष्माण्ड कुल का एक वर्षीय, मौसमी व बैलदार पौधा है। देश के विभिन्न भागो की स्थानीय भाषा में इसको कचरिया, काचर, मट-काचर, काचरा, सैंद, सेंघा, पथेया व गोरड़ी आदि नमो से जाना जाता है। अंग्रेजी में इसको मेंगों मेलन के नाम से भी जानते है। काचरी के फलों के 100 ग्राम भाग में जल 88.25%, कार्बोहाइड्रेट 7.45%, प्रोटीन 0.28%, वसा 1.28% व रेशा 1.21% पाये जाते है। विज्ञानिको द्वारा विकसित उन्नत तकनीकियो को अपनाकर अधिक उत्पादन एवं अच्छा धनलाभ अर्जित किया जा सकता है।

जलवायु एवं भूमि

काचरी की खेती गर्म शुष्क एवं अर्ध शुष्क जलवायु में की जा सकती है | गर्म शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रो में जहाँ वर्षा कम होती है, वहाँ पर काचरी की खेती सफलतापूर्वक की जा सकती है, परन्तु अच्छी पैदावार के लिए उचित जल निकास एवं बलुई व बलुई दोमट मिट्टी जिसका पी.एच. 6-7 हो सर्वोतम मांनी जाती है | बीज अंकुरण के लिए 20-22 डिग्री सेल्सियस तथा पोधे की वृधि व फल जमाव के लिए 32-38 डिग्री सेल्सियस तापमान उत्तम रहता है |

खेत की तैयारी

खेत की तेयारी के लिए सबसे पहले मिटटी पलटने वाले हल से गहरी जुताई करे फिर दो जुताई हेरो से कर पाटा लगा दे। खेत की अंतिम जुताई के समय गोबर की सड़ी हुई खाद पुरे खेत में अच्छी तरह से मिला देनी चाहिए। फसल को दीमक व अन्य भूमिगत कीड़ो से बचाने के लिए फिप्रोनिल 0.3% GR @

10 किलोग्राम या नीम खली @ 25 किलोग्राम सुखा पाउडर प्रति हेक्टर की दर से अंतिम जुताई के समय खेत में मिला कर पाटा लगा देना चाहिये।

खाद एवं उर्वरक

फसल की अच्छी बढवार तथा अधिक उत्पादन के लिए 50 क्विंटल गोबर खाद या 5 क्विंटल वर्मी कम्पोस्ट या 8-10 ट्रेक्टर ट्रोली भेड़ व बकरी की मिगनी की सड़ी हुई खाद प्रति हेक्टर की दर से अंतिम जूताई के समय खेत में अच्छी तरह से मिला देनी चाहिए। इसके अंतरिक्त 100 किलोग्राम डीएपी, 100 किलोग्राम सिगल सुपर फास्फेट, 50 किलोग्राम यूरिया , 50 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ़ पोटाश प्रति हेक्टर की दर से देना चाहिए। नाइट्रोजन की एक तिहाई मात्रा, फास्फोरस एवं पोटाश उर्वेरको की पूरी मात्रा बुवाई से पूर्व खेत में अथवा इसमें बनी नालियों में मिला देना चाहिए। शेष नाइट्रोजन की मात्रा को दो बराबर भागों में बांटकर टॉप ड्रेसिंग के रूप में बुवाई के 30 व 60 दिन बाद देना चाहिए।

उन्नत किस्मे

क्र.सं.	किस्म	विशेषताए
01.	ए.एच.के. 119	इस किस्म के फल छोटे अंडे आकार के है जिनका वजन तुड़ाई के समय 50 – 60 ग्राम होता है| इस किस्म के फल आकार, स्वाद, रंग और दिखने में बहुत आकर्षक होते हैं। यह सब्जी, चटनी, सूखा पाउडर, अचार बनाने और अन्य सब्जियों के साथ अम्लीय स्वाद आदि के लिए मिश्रण करने के लिए अत्यधिक उपयुक्त है। यह किस्म बुवाई के 68 – 70 दिन बाद पक कर तेयार हो जाती है|
02.	ए.एच.के 200	इस किस्म के फल 100 – 120 ग्राम वजन के होते है| जो की बुवाई के 65 – 67 दिन बाद पक कर तेयार हो जाते है|

बुवाई का समय

काचरी की खेती ग्रीष्म एवं वर्षा ऋतु दोनों में ही सरलता से की जा सकती है। ग्रीष्मकालीन फसल के लिए बुवाई का सर्वोत्तम समय 15 फरवरी से 15 मार्च तथा वर्षाकालीन फसल के लिए बुवाई का समय 15 जून से 15 जुलाई तक रहता है। वर्षा होने की स्थिति में रेगिस्तानी क्षेत्रों मे काचरी की फसल की बुवाई जून के मध्य से जुलाई के अंत तक भी की जा सकती है|

बीज की मात्रा एवं बीजोंपचार

बुवाई करने के लिए बीज की मात्रा उनकी अंकुरण क्षमता बुवाई का समय एव विधि पर निर्भर करती है| नाली कुंड या क्यारी विधि से बुवाई करने के लिए 1.5 से 2.0 किलोग्राम बीज प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता है| बूंद-बूंद प्रणाली में हाथ से बुआई के लिए 500 से 600 ग्राम बीज प्रति हेक्टर पर्याप्त रहता है| फसल को बीमारियों से बचाने के लिए बुवाई से पहले बीजों को कार्बेंडाजिम या थाईरम नामक दवा 2 से 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके बोना चाहिए|

बुवाई की विधियां

खेत की अंतिम जुताई के पश्चात पाटा लगाकर तैयार खेत में 1.5 से 2.5 मीटर की दूरी पर 50 से 60 सेंटीमीटर चौड़ी नालियां अथवा कूड बना लिए जाते हैं, जिनके एक किनारे 50 से 60 सेंटीमीटर दूरी पर बीज बोया जाता है। प्रत्येक स्थान पर दो से तीन बीज बोना चाहिए तत्पश्चात 15 से 20 दिनों बाद एक

स्थान पर एक दो पौधे ही रखना चाहिए। नालियों की अधिकतम लंबाई 20 से 25 मीटर रखनी चाहिए | शुष्क एवं अर्ध शुष्क क्षेत्रों में बूंद बूँद सिंचाई प्रणाली से काचरी का उत्पादन श्रेष्ठ होता है |

सिंचाई एवं जल प्रबंधन

काचरी में अच्छे उत्पादन के लिए ग्रीष्मकालीन फसल में 7 से 8 दिन के अंतराल पर सिंचाई करते रहना चाहिए। फूल और फल आते समय पौधों में पानी की कमी नहीं आनी चाहिए। फलो के पूर्ण आकार लेने पर सिंचाई बंद कर देनी चाहिए। गर्मी में 7 से 8 तथा बरसात में एक से दो सिंचाई प्रयाप्त रहती है। सिंचाई की नाली यां बूंद बूंद सिंचाई प्रणाली इस फसल के लिए श्रेष्ठ रहती है। काचरी के खेत में नमी संरक्षण के लिए वर्षा पूर्व जून माह में खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए ताकि भूमि में वर्षा का पानी संरक्षित हो सके। खेत में नालिया या हल्के गहरे कुंड बनाकर वर्षा जल का संग्रहण किया जाना चाहिए। खरपतवार रहित खेत एवं पलवार बिछाकर खेत की नमी का संरक्षण किया जा सकता है|

निराई गुड़ाई

बीज अंकुरण के बाद समय-समय पर हल्की निराई गुड़ाई करते रहना चाहिए। निराई गुड़ाई से खरपतवार निकालने के साथ-साथ भूमि में नमी का संरक्षण भी हो जाता है। प्रत्येक सिंचाई के बाद हल्की-फुल्की निराई गुड़ाई करनी चाहिए।

फलों की तुडाई एव उपज

काचरी के फलों को पूर्ण विकसित होने पर ही तोड़ना चाहिए। प्राय बुवाई के 65 से 70 दिन बाद फल तूडाई प्रारंभ होकर 120 दिन तक चलती है। फल तुडाई में 2 दिन का अंतराल रखना चाहिए। काचरी की एक हेक्टेयर से 90 से 120 क्विंटल उपज प्राप्त की जा सकती है|

कीट प्रबंधन

काचरी की फसल को नुकसान पहुंचाने वाले प्रमुख कीट हैं – कद्दू का लाल भृंग, एपीलेकना भृंग, फल मक्खी, चिचड़ी किट (माइट्स), चेपा हरा तेला व मोयला(एफिड) आदि।

- ✓ इनके नियंत्रण के लिए उचित फसल चक्र अपनाएं।
- ✓ खेत को खरपतवार रहित साफ सुथरा रखें ग्रीष्म ऋतु में मिट्टी पलटने वाले हल से खेत की गहरी जुताई करें एवं फसल अवशेषों एवं भृंगो को एकत्रित करके जला दें अथवा मिट्टी में गहरा दबा दें |
- ✓ काचरी में समेकित कीट नियंत्रण के लिए बुवाई पश्चात 18-35, 30-35 एवं 40-50 दिनों के क्रम में इमिड़ाक्लोप्रीड 17.8% एस.एल. @ 0.3 मिलीलीटर या थायमिथोग्जाम 25% डब्लू. जी. @ 0.25 ग्राम प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर शाम के समय छिड़काव करे।
- ✓ माइट नियंत्रण हेतु अबामेक्टिन 1.95% ई.सी. @ 0.5 मिलीलीटर या एजाड़िरेक्टिन 1% @ 2 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करे।
- ✓ पत्ती खाने वाले कीट के लिए मेलाथियान 50% ई.सी. @ 2 मि.ली. प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर छिड़काव करें

रोग प्रबंधन

छाछ्या रोग : इस रोग के नियंत्रण के लिए खेत को स्वच्छ रखें। रोग ग्रस्त भागों को एकत्रित करके जला दें। डाईनोकेप @ 01 मिलीलीटर या हेक्जाकोनाजोल 5% ई.सी. @ 1 मिलीलीटर का प्रति लीटर पानी का घोल बनाकर 15 दिन के अंतराल पर 2 से 3 बार छिड़काव करना चहिए।

मृदुरोमिल / तुलसिता: रोग ग्रस्त लताओं को एकत्रित करके जला दें तथा डाईथेन एम 45 या रिडोमिल एम.जेड @ 2 ग्राम प्रति लीटर पानी के घोल बनाकर 15 दिन के अंतराल पर 2 से 3 बार छिड़काव करना चहिए।

श्याम वर्ण: इस रोग के नियंत्रण के लिए बीजों को बोने से पहले एग्रोसिन जी.एन. या कार्बेंडाजिम @ 2.5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करना चाहिए। खड़ी फसल पर रोग के लक्षण दिखाई देते हैं डाईथेन एम-45 @ 3 ग्राम या बाविस्टीन @ 1 ग्राम या मेकोजेब @ 2 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर 2 से 3 छिडकाव करने चाहिए।

विषाणु रोग:– इस रोग की रोकथाम के लिए कोई प्रभावी उपाय नहीं है फिर भी इसके दुष्प्रभाव को रोकने के लिए रोग ग्रस्त पौधों को उखाड़ कर जला दें या मिट्टी में दबा दें।

इस रोग के प्रबंधन के लिए इमिडाक्लोप्रिड 17.8% एस.एल. @ 0.3 मिलीलीटर या डाइमिथोएट 30 ई.सी. @ 1 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी मैं घोल बनाकर 10 से 15 दिनों के अंतराल पर 3 से 4 छिड़काव करें।

AGRI ARTICLES
Publishing Skills...
E-Magazine for Agricultural Articles
(www.agriarticles.com)